दौलत राम

बनाम्

पंजाब राज्य

अप्रैल 29, 1997

[एम. एम. पंची और के. एस. परीपूरनन, जे. जे.]

आपराधिक मुकदमाः

मुकदमें द्वारा महत्वपूर्ण बचाव गवाहों की गैर-प्रशंसा/अज्ञानता न्यायालय के साथ-साथ उच्च न्यायालय द्वारा सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बचाव पक्ष के साक्ष्य की सराहना की जानी चाहिए यदि नीचे दिए गए न्यायालयों द्वारा इसकी उपेक्षा की जाती है।अभियोजन के मामले का समर्थन करने के लिए आगे आने वाले किसी भी पड़ोसी ने चाहे वह घातक हो-हां-नहीं कहा।

मृत्यु के समय मृतक की पोशाक-प्रासंगिकता-आयोजित, उसके पहनावे का तरीका इसस तथ्य का कमसे कमसंकेत था कि वह दूसरे मंतव्य की यात्रा के लिए तैयार था-यदि मृत्युकासमय हो तो दोषसिद्धि को अलग रखा जा सकता है। अभियोजन पक्ष द्वारा लगाएगए आरोप से भौतिक रूप से अलग साबित होता है।

चिकित्सा न्यायशास्त्र

मृत्यु का समय-पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और डॉक्टर के साक्ष्य (पोस्टमॉर्टम का संचालन) की ठीक से व्याख्या करके पता लगायाा जाना चाहिए न कि अभियोजन पक्ष की कहानी से।

दंड प्रक्रिया संहिता, 1973: धारा 313 क्या अभियुक्त द्वारा दिया गया कथन प्रासंगिक है यदि-बयान गवाहों की प्रतिपरीक्षा में भी सुझाव के रूप में आया था अभियोजन पक्ष के गवाह (अभियुक्त की पत्नी) द्वारा बयान के रूप में, जिसे अभियोजन पक्ष उनके बयान की शुरूआत में ही इसे शत्रुतापूर्ण घोषित कर दिया गया।

भारतीय दंड संहिता, 1860:

शस्त्र अधिनियम की धारा 272 के साथ पढ़ा गया-25 साल के शिक्षित अविवाहित युवक की हत्या-चश्मदीद गवाह की उपस्थिति में हत्या। गवाहों ने एक पुलिस कांस्टेबल पर आरोप लगाया-उसकी सर्विस रिवोंल्वर से हत्या दोषसिद्धि को बरकरार नहीं रखा जा सकता है, यदि बचाव संस्करण अलग है और घटना का समय अलग है। अभियोजन पक्ष द्वारा आरोपित मृत्यु से मृत्यु अलग साबित होती है।

अपीलार्थी पुलिस में सिपाही के रूप में कार्यरत था और पीडब्लू 6 उसकी पत्नी थी। दंपत्ति के पास आर. मृतक के इलाके में रहने के लिए एक कमरे का घर था, 25 साल का एक व्यक्ति जिसने अपना एम. ए. किया था, अपीलार्थी के घर पास एक घर बनाया था, और अकेला रह रहा था। उनके पिता, उप-निरीक्षक जी. एस. एक समय में आर. में तैनात थे, लेकिन संबंधित स्थान पर आर. मृतक के पिता के भाई, जी, एक पीडब्लू, से लगभग 53 मील दूर एक शहर एम में तैनात किया गया था, जो एस में रहता था, जो आर. मृतक के पिता से लगभग 55 मील की दूरी पर था। आर. दोनों शहर अलग-अलग दिशाओं में थे।

अभियोजन पक्ष का मामला यह था कि जी. पिता का भाई मृतक ने कई मौकों पर आर स्थान का दौरा किया था और एक भावना विकसित की कि मृतक पीडब्लू 6 के साथ चल रहा था और वह रिश्ते को तोड़ना चाहता था। इस प्रकार घटना की तारीख को, 1.00 बजे के कुछ समय बादः पीएम, वह क्रम में एच के साथ आर स्थान पर आया लगभग 1.45 बजे। जी. एच. और मृतक बाद वाले के घर से निकले पड़े और अपने पैतृक स्थान पर जाएँ। ऐसा करते हुए मृतक ने जी और एच को बताया कि उसके पास अपीलार्थी के घर पर देने के लिए एक संदेश था। ऐसा कहते हुए उन्होंने गए और अपीलार्थी के घर में प्रवेश किया जिसके बाद जी और एच आए। उन्होंने देखा कि वह मृतक को सबक सिखाने जा रहा था क्योंकि वह उसमें घर में प्रवेश कर चुका था और यह कहते हुए कि उसने सर्विस रिवाल्वर से तेजी से पाँच गोलियां चलाई। चोट लगने पर मृतक गिर गया एक खाट पर, जो एकल कमरे में पड़ी थी। अपीलार्थी ने फिर हमला किया मृतक के चेहेरे पर चाकू है। फिर पीडब्लू 6 ने

हस्तक्षेप किया। उसे भी अपीलार्थी द्वारा की गई कुछ चोटें मिलीं। इसके बाद अपीलार्थी ने घटना के स्थान से अपने साथ अपनी रिवॉल्वर ले जा रहा है। जी और एच, चश्मदीद गवाह मृत के पास गया और उसे मृत पाया। अभियोजन पक्ष का मामला आगे यह था कि जी ने एच को पीछे छोड़ दिया मृत शरीर स्थानीय पुलिस स्टेशन गया और 2ः45 पीएम। बजे प्राथमिकी दर्ज की पुलिस मौके पर आई और जाँच रिपोर्ट तैयार की और मृतक शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया जो डॉक्टर पीडब्लू 1 द्वारा 5ः35 पी0 एम0 पर मृतक की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट (एक्स. पी. ए.) से पता चला कि मृत्यु तात्कालिक थी और मृत्यु और पोस्टमार्टम के बीच का समय छह घंटे के भीतर था। हालाँकि, मुकदमें में, पीडब्लू 1 ने अपने बयान में संशोधन किया। कहने के लिए मृत्यु और पोस्टमार्टम के बीच की संभावित अवधि हो सकती है आठ घंटे भी। मृतक के खून से सने कपड़े जो टी-शर्ट और पायजामा थे, उन्हें हटा दिया गया और पुलिस को दे दिया गया। हालाँकि, अपीलार्थी का एक विपरीत संस्करण था और यह इस रूप में आया

हालाँकि, अपीलकर्ता के पास एक विपरीत संस्करण था और यह गवाहों की जिरह के साथ साथ पी0 डब्लू0 6 के बयान में सुझाव के रूप में आया था, जिसे अभियोजन पक्ष ने बयान की शुरूआत में ही पक्ष द्रोही घोषित कर दिया था। दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 313 क तहत, अपीलकर्ता ने एक ब्यान दिया कि घटना के दिन सुबह जब वह सब्जी आदि खरीदने के लिए अपने घर से बाजार गया था, तो मृतक ने उसके घर में घुसकर उसकी पत्नी पर आपराधिक हमला करने की कोशिश की। इस प्रक्रिया में उसे चोटें आईं और उसने महतक को चोटें पहुंचाई जिससे उसकी मृत्यु हो गई। वापस लौटने पर उसने अपनी पत्नी को घर से नदारद पाया जबकि मृतक का शव वहीं था। इसके बाद पुलिस स्टेशन गया जहां उसकी पत्नी बैठी थी और उसने घटना के बारे में बताया। उन्होंने पुलिस से उसका ब्यान दर्ज करने का भी अनुरोध किया, लेकिन उन्हांेने ब्यान दर्ज करने से इनकार कर दिया। स्थानीय पुलिस ने फिर एम0 और एस0व स्थानों पर सूचना भेजी और फिर मृतक के पिता

पहुंचे, जिन्होंने जी0 और एच0 को पी0 डब्लू0 के रूप मंे नियुक्त किया। फिर यह झूठा मामला गढ़ा गया। जिंदा कारतुस वाली रिवॉल्वर उसकी पत्नी पुलिस स्टेशन ले गई थी।

पीडब्लू 6 ने अपने बयान में मृतक की हत्या करने की बात स्वीकार की अपीलार्थी की सर्विस रिवॉल्वर जो उसने कहा कि उस खाट पर तकिए के नीचे पड़ी थी जिस पर मृतक मृत पाया गया था।

अपीलार्थी ने अपने बचाव में 13 आधिकारिक गवाहों से पूछताछ की। पंजाब पुलिस का कहना है कि चूंकि यह घटना लगभग 8ः00 बजे हुई थी सुबह, मृतक के पिता जी. ए. से संपर्क करने के लिए पुलिस द्वारा उग्र टेलीफोन और वायरलेस संदेश भेजे गए थे। यह प्रयास अभियोजन पक्ष द्वारा अनुमानित घटना के समय को हटाने के लिए था।

इन तथ्यों पर विचारण न्यायालय ने अपीलार्थी को धारा के तहत दोषी ठहराया 302 शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के साथ पठित भारतीय दंड संहिता की, और उच्च न्यायालय के समक्ष अपील में इसकी पुष्टि की गई थी। इसलिए यह अपील की गई है।

अपील को अनुमति देते हुए यह न्यायालय पकड़ना:

1. अगर रक्षा में छेद उठाए जा सकते हैं जो आगे नहीं ले जाता है अभियोजन की कहानी स्वचालित रूप से साबित हो रही है। अभियोजन पक्ष को अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ता है और बचावपक्ष की कमजोरी से कोई लाभ नहीं उठा सकता है। [1068. एफ-ई,]

2. घटना का समय गंभीर रूप से विवाद में है अभियोजन पक्ष के अनुसार घटना दोपहर 2 बजे की और बचाव पक्ष के अनुसार यह सुबह लगभग 8 बजे हुई। की स्थिति अपराध विवादित नहीं है। पीडब्लू 1 के अनुसार मृत्यु और पद के बीच का समय मृत्यु आठ घंटे तक हो सकती है। इस प्रकार चिकित्सकीय राय के अनुसार अपराध आठ घंटे शाम साढ़े पाँच बजे में नहीं देखा जा सकता है। [1068.एफ-जी,]

3. पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार, मृतक का पेट जब विच्छेदन से पता चला कि छोटी आंत और उनकी सामग्री थी बड़ी आंत और उनकी सामग्री स्वस्थ और खाली दिखाई दी।

मूत्राशय को स्वस्थ और कम मात्रा में पाया गया। मूत्र। इस प्रकार पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से यह निर्णायक रूप से स्थापित हो जाता है अभियोजन पक्ष अदालत से यह विश्वास कराएगा कि दोपहर 2 बजे तक जब उसकी मृत्यु हो जाएगी अपने चाचा जी के साथ अपने पैतृक स्थान के लिए रवाना होने वाला था, वह उम्मीद नहीं की जाती थी कि डनहोंने नियमित रूप से नाश्ता या दोपहर का भोजन किया होगा। जी के अनुसार जब वह और एच दोपहर लगभग 1 बजे आर तक पहूँच गए थे, तो उनके पास था कि घटना शायद अपेक्षित समय से बहुत पहले हुई थी नाश्ते और दोपहर के भोजन के लिए, संभवतः सुबह के समय। निचली अदालतें मामले के इस पहलू को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया है। [1068 -जी-एचः 1069-ए-सी]

4. उनकी पोशाक का तरीका इस तथ्य का कम से कम संकेत था कि वह कंपनी में 55 मील दूर किसी अन्य मंतव्य की यात्रा के लिए निर्धारित किया गया था यह इस सिद्धांत के अधिक करीब है कि सुबह के समय वह लापरवाही से कपड़े पहने हुए थे और अभियुक्तों के घर डिजाइनों के साथ गया था जो दूर थे सम्माननीय। [1069.ई-एफ]

5. दो चश्मदीद गवाह जी और एच एस से है और उनके अनुसार अपने स्वयं के संस्करण के लिए वे वहॉ मृतक को ले जाने के लिए आए हैं। मृतक के घर आना उसका अजीब सिक्का है। उसे मारे जाने का गवाह बनने के लिए घटना की साजिश रची गयी। यह काफी अजीब दौलत राम है। कि जी अपने दम पर अपने भतीजे की देखभाल करेगा कि वह पी. डब्ल्यू 6 के साथ अपने पे्रमपूर्ण संबंधों से दूर रहे, बिना विश्वास में लिए मृतक के पिता, [1069.जी-एच]

6. अभियोजन पक्ष ने कोई ठोस कारण नहीं बताया है कि क्यों इन गवाहों की उपस्थिति पर संदेह नहीं किया जाना चाहिए, विशेष रूप से जब घटना का समय संदेह में डूबा हुआ हो। इसके अलावा बचाव पक्ष के साक्ष्य से पता चलता है कि दोनों पुलिस स्टेशनों यानि एम और एस में जहाँ मृतक के पिता और चाचा क्रमशः रहते थे, उन पर उन्मादी रूप से प्रयास किया जा रहा था पुलिस स्टेशन के संबंध में पुलिस स्टेशन से संपर्क किया जाय।

ये सभी तथ्य बचाव पक्ष के बयान को विश्वास दिलाते हैं कि पीडब्ल्यू को अपराध के बारे में पता चला था क्योंकि मामले की सूचना पहले पुलिस स्टेशन में पीडब्ल्यू 6 द्वारा दी गई थीऔर उसके बाद अपीलार्थी द्वारा दी गई थी।]1070.ए-सी]

7. पड़ोस से समर्थन के लिए कोई भी आगे नहीं आया है अभियोजन पक्ष भले ही जांच अधिकारी का कहना है कि उसने पड़ोस के कुछ लोगों से पूछताछ की थी। [1070.सी]

8. परिस्थितियों की समग्रता पर यह न्यायालय संदेह को स्वीकार करता है। कि दो कथित चश्मदीद गवाहों में से कोई भी घटना स्थल पर मौजूद नहीं था, और नही उन्होंने इसे देखा है। [1070.डी]

9. मृतक की पोशाक और उसके पेट की सामग्री से पता चलता है कि अभियोजन पक्ष ने दावा किया कि दोपहर 2 बजे से पबहुत पहले उनकी हत्या कर दी गयी थे। ख्1070.ई, आपराधिक अपील न्यायनिर्णयनः आपराधिक अपील सं0 489 व ि1989 से।

पंजाब के 19.10.87 दिनांकित निर्णय और आदेश से और सी. आर. एल. में हरियाणा उच्च न्यायालय का ए. सं 227/1986।

अपीलार्थी की ओर से पंकज कालरा और विजय कुमार।

उत्तरदाता की ओर से आर. एस. सोधी

न्याायलय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

पंजी, जे. यह अपील एक अपीलीय निर्णय से उत्पन्न हुई है और पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय का आदेश 19 अक्टूबर, 1987 को 1986 की आपराधिक अपील संख्या 427/डी.बी. में पारित किया गया।

अपीलार्थी पंजाब पुलिस में सिपाही के रूप में कार्यरत था और संबंधित समय पर एकम बृज लाल गोयल के पूर्व विधायक, राजपुरा, जिला पटियाला के व्यक्तिगत गार्ड के रूप में कर्तव्य पर सौंपा गया था। श्रीमती पुष्प, पीडब्लू उनके थे। पत्नी। दंपत्ति के मुट्ठी भर बच्चें थे। उनके पास एक कमरे का घर था। राजपुरा के एक इलाके में रहने के लिए। पड़ोस

में, नरिंदर सिंह दौलत राम का। नरिंदर सिंह एक शिक्षित अविवाहित युवक थे। 25 एम. ए. किया है। वह कुछ व्यवसाय शुरू करने पर विचार कर रहा था। राजपुरा। वह अपने घर में अकेला रहता था। उनके पिता सह-इंस्पेक्टर थे। संबंधित समय मालेकोटला, एकशहर में सी. आई. ए.स्आफ में लगभग 53 पोस्ट किया गया था। राजपुरा से मीलांे दूर उनके पिता के भाई, पी. डब्ल्यू, वर्णम सिंह यहाँ रहते थे। सुनाम, राजपुरा से लगभग 55 मील की दूरी पर है। दोनों शहर थे अलग-अलग दिशाओं में।

अभियोजन पक्ष का मामला यह है कि मृतक के पिता भाई, पीडब्लू, वर्णम सिंह ने कई मौंको पर राजपुरा का दौरा किया था और यह महसूस किया था कि मृतक पुष्प, पीडब्लू, वर्णम सिंह, पीडब्लू के साथ संबंध तोड़ना चाहता था। इस प्रकार 23 जुलाई, 1985 को दोपहर 1 बजे के कुछ समय बाद, वह मृतक को अपनेर साथ अपने पैतृक स्थान सुनाम ले जाने के लिए पीडब्लू, हरदियाल सिंह के साथ राजपुरा आए। आधे घंटे के बाद, लगभग 1.45 बजे, वर्णम सिंह, हरदियाल सिंह, पीडब्लू और मृतक सुनाम जोने के लिए उसके घर से निकले। इस बीच, मृतक ने एफडब्ल्यूएस, वर्णम सिंह और हरदियाल सिंह को बताया कि उसे दौलत राम के घर पर एक संदेश देना है। यह कहते हुए वह दौलत राम के घर गया और उसके बाद वर्णम सिंह और हरदियाल सिंह पीडब्लू के घर में घुस गया। उन्होंने उसे पुष्पा पीडब्लू से बात करते देखा। इस बीच, अपीलार्थी दौलत राम पहुँच गए। दौलत राम ने चिल्लाकर कहा कि वह मृतक को सबक सिखाने जा रहा है क्योंकि वह उसके घर मंे घुस गया था और ऐसा कहते हुए उसने मृतक की ओर सर्विस रिवॉल्वर से तेजी से पांच गोलियां चलाई। चोट लगने पर मृतक एक खाट पर गिर गया, जो एकल कमरे में पड़ी थी। इसके बाद अपीलार्थी ने मृतक के चेहरे पर चाकू से हमला किया। फिर पुष्पा पीडब्लू ने हस्तक्षेप किया। अपीलार्थी ने उसे भी कुछ चोटें पहुंचाई थीं। इसके बाद अपीलार्थी अपनी रिवॉल्वर अपने साथ लेकर घटनास्थल से चला गया। सतनाम सिंह और हरदियाल सिंह चश्मदीद गवाह मृतक के पास गए और उसे मृत पाया। अभियोजन पक्ष का मामला आगे यह है कि

हरम सिंह हरदियाल सिंह को शव के पास छोड़कर स्थानीय पुलिस स्टेशन, राजपुरा गया और दोपहर 2.45 बजे प्राथमिकी दर्ज की। गति। एस. आई. हरसंजन सिंह पीडब्लू 12 मौंके पर पहुंचे और जाँच रिपोर्ट तैयार की। उन्होंने उसमें खाट पर पड़े शव को दिखाया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया था। डॉ. विनोद कुमार पीडब्लू. 1 द्वारा शाम 5ः35 बजे आयोजित किया गया। उन्हें उसी दिन शाम 7 बजे पुष्पा पीडब्लू की चोटों की जांच करने की भी आवश्यकता थी। उसने उसकी तीन चोटों पर पाया, जिनमेंसे दो एक कुंद हथियार के परिणामस्वरूप थी। हमला और एक तेज धार वाले हथियार से। मृतक की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से पता चला कि मृत्यु तत्काल हुई थी और वह समय मृत्यु और पोस्टमॉर्टम के बीच छह घंटे के भीतर था। हालाँकि मुकदमें में उन्होंने अपने बयान में संशोधन करते हुए कहा कि मृत्यु और पोस्टमॉर्टम के बीच की संभावित अवधि भी आठ घंटे हो सकती है। खून से सने कपड़े मृतक जो टी-शर्ट और पायजामा थे, उन्हें हटा दिया गया और मामले की संपत्ति के रूप में पुलिस को दे दिया गया। जाँच पूरा होने के बाद, अपीलार्थी पर मुकदमा चलाया गया

सत्र न्यायाधीश, पटियाला ने भारतीय दंड संहिता की धारा 272 के साथ-साथ शस्त्र अधिनियम की धारा 27 के तहत भी कार्य किया। उन्हें दोनों अपराधों के लिए दोषी ठहराया गया और आजीवन कारावास और एक लाख रूपये के जुर्माने की सजा सुनाई गई। 1000 रूपया पूर्व अपराध के लिए एक वर्ष के लिए कठोर कारावास और बाद के अपराध के लिए एक वर्ष के लिए कठोर कारावास की सजा; सजाएं समवर्ती रूप ये चलेंगी। उच्च न्यायालय के समक्ष अपील में उनकी पुष्टि की गई थी।

अपीलार्थी के पासएक प्रति-संस्करण था। यह संस्करण गवाहों की प्रतिपरीक्षा के साथ-साथ पीडब्लू द्वारा बयान में सुझाव के रूप में आया था। 6 पुष्पा, जिसे अभियोजन पक्ष ने उसके बयान की शुरूआत में ही शत्रुतापूर्ण घोषित कर दिया था। अपीलार्थी के पास धारा 313 ब्तण्च्ण्ब्ण् के तहत निम्नलिखित कथन है।

"मैं निर्दोष हूँ। मुझे गलत तरीके से फंसाया गया है। घटना के दिन सुबह जब मैं अपने घर से सब्जी आदि खरीदने के लिए बाजार जा रहा था, तो मृतक मेरे घर में घुस आया और मेरी पत्नी के साथ आपराधिक हमला करने की कोशिश की और उसने विरोध किया। इस प्रक्रियामें उसके हाथों में चोटें आईं और उसने मृतक को चोट पहुंचाई जिससेउसकी मौत हो गइ। लौटने पर मैंने अपनी पत्नी को घर से गायब पाया, जबकि मृतक का शव वहाँ था। फिर मैं उस पुलिस स्टेशन गया जहाँ मेरी पत्नी बैठी थी और उसने घटना के बारे में बताया। मैंने पुलिस से उसका बयान दर्ज करने का भी अनुरोध किया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। इसके बाद पुलिस ने मालेरकोटला और सुनाम और गुर को सूचना भेजी। मृतक के पिता बचन सिंह एस. आई. पहुंचे, जिन्होंने व्यवस्था की। पी. डब्ल्यू. के रूप में वर्णम सिंह और हरदियाल सिंह। यह झूठा मामला तब था मनगढ़ंत। जिंदा कारतुस के साथ रिवॉल्वर को ले जाया गयाा था मेरी पत्नी द्वारा पुलिस स्टेशन।"

अपीलार्थी ने अपने बचाव में 13 आधिकारिक गवाहों से पूछताछ की। घटना सुबह लगभग 8 बजे हुआ था, वहाँ था राजपुरा पुलिस द्वारा एस. आई. से संपर्क करने के लिए उग्र टेलीफोनिक और वायरलेस संदेश। मृतक केपिता गुरबचन सिंह, जो उस समय मालेरकोट में तैनात थे ला। यह प्रयास घटना के समय को हटाने के लिए था जैसा कि अनुमान लगाया गया था अभियोजन और इसलिए कहानी अपने आप में।

विद्वान सत्र न्यायाधीश ने अपने फैसले का आधे से अधिक हिस्सा समर्पित कर दिया रक्षा संस्करण की गंभीर रूप से जांच करने में जैसे कि इसके मानक की आवश्यकता है अभियोजन पक्ष के मामले के रूप में सबूत। हालांकि उच्च न्यायालय ने टाल दिया उस मार्ग का अनुसरण किया और खुद को अभियोजन मामले तक सीमित रखा। अगर छेद बचाव पक्ष में चुना जा सकता है जो अभियोजन पक्ष की कहानी की ओर नहीं लेजा है, स्वतः सिद्ध हो जाता है। अभियोजन पक्ष को अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ता है और रक्षा की कमजोरी से कोई लाभ नहीं उठा सकते हैं। रखते रहें। इसे ध्यान में रखते हुए हम आगे बढ़ते हैं।

घटना का समय गंभीर रूप से विवाद में है। इसके अनुसार, अभियोजन पक्ष घटना दोपहर 2 बजे हुई और के अनुसार बचाव यह सुबह लगभग 8 बजे हुआ। की स्थिति अपराध विवादित नहीं है। डॉ. विनोद कुमार पीडब्लू.1 के अनुसार समय मृत्यु और पोस्टमॉर्टम के बीच आठ घंटे तक का समय हो सकता है। इस प्रकार चिकित्सकीय राय के अनुसार आठ घंटे तक किया जा सकता था।

इससे पहले शाम 5ः30 बजे तक, इसे सुबह 9 बजे के आसपास रखें। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता है। निश्चितता के रूप में देखा जाता है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट पर आते हैं एक्स। पी ए, द विच्छेदित किए जाने पर मृतक के पेट से पता चलता है कि पेट और उसका सामग्री स्वस्थ और खाली थी। छोटी आंतें और उनकी सामग्री स्वस्थ के रूप में वर्णित किया गया था और इसमें थोड़ी मात्रा में अर्ध-पचाया गया था भोजन। बड़ी आंतों और उनकी सामग्री को स्वस्थ दिखाया गया और खाली है। मूत्राशय को स्वस्थ और कम मात्रा में 1069 दिखाया गया था। मूत्र से। इस प्रकार पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट से यह निर्णायक रूप से स्थापित होता है कि मृतक ने अपनी मृत्यु से पहले घंटों तक पूरा भोजन नहीं लिया था। अभियोजन पक्ष हमें विश्वास दिलाएगा कि दोपहर 2 बजे तक, जब वह आनेर वाला था नाश्ते और दोपहर के भोजन के लिए अपेक्षित समय से बहुत पहले, संभवतः सुबह के घंटों में रखें। निचली अदालती ने इस पहलू को पूरी तरह से नजर अंदाज कर दिया है मामला।

यह स्मरणीय है कि मृतक एक शिक्षित युवक था। 25 राजपुरा में एक व्यवसाय स्थापित करना चाहते हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने अपना खुद का घर बनाने में अच्छा काम किया था। उनके माता-पिता अच्छे थे। माना जाता है कि सुमन के पास जाने के लिए वह अपने चाचा के साथ गया था टी-शर्ट और पायजामा पहनना, एक ऐसी पोशाक जिसे स्थानों पर जाने के लिए पहनना असामान्य है। ऊपर की पोशाक नीचे की पोशाक से मेल नहीं खाती है। जीवन के सामान्य स्वरूप को ध्यान में रखते हुए, मृतक से यह अपेक्षा कीजाती थी कि जब वह टी-शर्ट पहने तो उसे पायजामा पहनता तो उसे टी-शर्ट के बजाय शर्ट

या कुर्ते के साथ मिलात। उनकी पोशाक का तरीका इस तथ्य का कम से कम संकेत था कि वह अपने चाचा के साथ 55 मील दूर दूसरे मंतव्य की यात्रा के लिए तैयार थे। इसलिए मृतक की पोशाक है कुछ दिलचस्प। यह इस सिद्धांत के अधिक करीब है कि सुबह के समय वह लापरवाही से कपड़े पहने हुए था और ऐसे डिजाइनों के साथ आरोपी के घर गया था जो सम्मानजनक नहीं थे।

दो कथित चश्मदीद गवाह, वर्णम सिंह और हरदियाल सिंह पीडब्लू, सुनाम के हैं और उनके अपने बयान के अनुसार ऐसा प्रतीत होता है कि मृतक को ले जाने के लिए वहाँ आओ। मृतक के घर उनका आना एक अजीब संयोग है जो उसे मारे जाने के गवाह के रूप में नियोजित किया गया है। यह अजीब बात है कि वर्णम सिंह पी डब्ल्यू, अपने भतीजे की देखभाल खुद कर रहा होगा ताकिवह पुष्पा के साथ अपने पे्रमपूर्ण संबंधों से दूर रहे। मृतक के पिता को विश्राम में लिए बिना पीडब्ल्यू। उनके बयान के अनुसार उन्होंने इस संबंध को अपने तक ही सीमित रखा था। अजीब बात है कि उन्होंने हरदियाल सिंह, पी. डब्ल्यू. को विश्वास में लिया और उन्हें राजपुरा ले आए। मृतक को लाने के लिए वर्णम सिंह के साथ राजपुरा गए। द. अभियोजन पक्ष ने कोई ठोस कारण नहीं बताया है कि इन गवाहों की उपस्थिति पर संदेह क्यों नहीं किया जाना चाहिए, खासकर जब घटना का समय संदेह में डूबा हुआ है। इसके अलावा बचाव पक्ष के साक्ष्य भी सुझाव देते हैं कि दोनों पुलिस थानों यानी मालेरकोटला और सुनाम में जहां क्रमशः मृतक केपिता और चाचा रहते थे,उन पर उन्मादी रूप से प्रयास किया जा रहा था पुलिस स्टेशन के संबंध में पुलिस स्टेशन सेसंपर्क किया जाए। ये सभी सत्य बचाव पक्ष के बयान को विश्वास दिलाते हैं कि पी. डब्ल्यू को अपराध के बारे में पता चला था क्योंकि मामले की सूचना पुलिस स्टेशन में पहली बार में पी. डब्ल्यू द्वारा दी गई थी। 6 उसके बाद अपीलार्थी ।

अंत में पड़ोस से कोई भी समर्थन के लिए आगे नहीं आया है अभियोजन पक्ष भले ही जांच अधिकारी का कहना है कि वह पूछताछ करता है पड़ोस के कुछस लोगों से बात की।

यह कहना उनके लिए था कि उन्होंने किससे सवाल किया था और बचाव पक्ष के लिए नहीं कि वे उन नामों को उजागर करें ताकि उन व्यक्तियों को बचाव में बुलाया जा सकेक, जैसा कि विद्वान सत्र न्यायाधीश द्वारा अपेक्षित था। इस प्रकार परिस्थितियों की समग्रता पर हम मनोरंजन करने आए हैं घटना का दृश्य,और न ही उन्होंने ऐसा देखा है। हमने घटना के समय और उसके तरीके के बारे में भी संदेह व्यक्त किया है। जिसे अभियोजन पक्ष हमें विश्वास दिलाएगा कि यह हुआ था। यह अच्छी तरह से हो सकता है कि यह रक्षा के सुझाव के अनुसार हुआ था। की पोशाक मृतक और उसके पेट की सामग्री से पता चलता है कि वह मुर था दोपहर 2 बजे से बहुत पहले, अभियोजन द्वारा सकारात्मक रूप से समय का दावा किया गया।

पूर्वगामी कारणों से, हम इस अपील की अनुमति देते हैं, आई. एम. को दरकिनार कर देते हैं, उच्च न्यायालय के साथ -साथ न्यायालय के निर्णय और आदेश सत्र आयोजित करें और अपीलार्थी को सभी आरोपों से बरी कर दें। अपीलार्थी जमानत पर है। उनके जमानत बांड जारी के दिए जाते हैं। जुर्माना, यदि उसके द्वारा भुगतान किया जाता है तो उसे वापस कर दिया जाय।

अपील की अनुमति दी गई।

आर के एस